तात्पर्य

तत्र शब्द का गम्भीर आशय है। इससे प्रकट होता है कि जब अर्जुन ने विश्वरूप का दर्शन किया, उस समय श्रीकृष्ण-अर्जुन दोनों रथ पर आसीन थे। युद्धभूमि में अन्य योद्धा इस रूप को नहीं देख सके, क्योंकि श्रीकृष्ण ने केवल अर्जुन को ही दिव्य दृष्टि प्रदान की थी। अर्जुन ने श्रीकृष्ण के विग्रह में सहस्त्रों ब्रह्माण्डों को देखा। जैसा वैदिक शास्त्रों से ज्ञात है, सृष्टि में अनेक ब्रह्माण्ड और लोक हैं। इनमें से कुछ मृण्मय हैं; कुछ हिरण्यमय हैं; कुछ मणिमय हैं; कुछ अति बड़े हैं और कुछ इतने बड़े नहीं हैं, इत्यादि। अर्जुन ने अपने रथ पर बैठे-बैठे ही इन सब लोकों को देखा। परंतु श्रीकृष्ण और अर्जुन में परस्पर क्या वार्ता हो रही है, यह कोई नहीं जान सका।

ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत।।१४।।

ततः=उसके अनन्तर; **सः**=वह; **विस्मयाविष्टः**=आश्चर्य से अभिभूत हुआ; **हृष्टरोमा**=भाव-विभोरता के कारण हर्षित रोमों वाला; **धनंजयः**=अर्जुन; **प्रणम्य**=प्रणाम करते हुए; **शिरसा**=सिर से; **देवम्**=श्रीभगवान् को; **कृताञ्जलिः**=हाथ जोड़े हुए; **अभाषत**=कहने लगा।

अनुवाद

उस रूप को देखकर आश्चर्य से चकित और पुलकित शरीर वाला अर्जुन श्रीभगवान् को सिर से प्रणाम कर के हाथ जोड़े हुए प्रार्थना करने लगा।।१४।।

तात्पर्य

दिव्य विश्वरूप के प्रकट होते ही श्रीकृष्ण और अर्जुन का पारस्परिक सम्बन्ध तत्काल बदल गया। पूर्व में, श्रीकृष्ण तथा अर्जुन का सम्बन्ध सखा-भाव पर आधारित था। अब विश्वरूप का प्रकटीकरण होने पर अर्जुन अतिशय श्रद्धाभाव से श्रीकृष्ण को प्रणाम कर रहा है तथा करबद्ध प्रार्थना भी करता है; साथ ही, विश्वरूप का गुणगान करता है। इस प्रकार, श्रीकृष्ण के प्रति सख्यरस के स्थान पर अर्जुन में अद्भुतरस का उदय हो गया है। महाभागवतजनों की दृष्टि में श्रीकृष्ण अखिलरसामृतमूर्ति हैं। शास्त्रों में बारह रसों का उल्लेख है। श्रीकृष्ण में ये सभी नित्य रहते हैं। इसी कारण उन्हें जीवों, देवताओं अथवा परमेश्वर और उनके भक्तों में परस्पर आदान-प्रदान किये जाने वाले सम्पूर्ण रसों का निधान अथवा अखिलरसामृतसिन्धु कहा जाता है।

आचार्यों का कथन है कि विश्वरूपदर्शन से अर्जुन में अद्भुत रस का उन्मेष हुआ। इसी कारण स्वभावतः अत्यन्त धीर, शान्त तथा मननशील होते हुए भी वह विस्मयाविष्ट हो गया; उसका संपूर्ण शरीर पुलकित हो उठा और इसी दशा में वह श्रीभगवान् को साष्टांग प्रणाम कर करबद्ध प्रार्थना करने लगा। निस्सन्देह वह भयभीत